आचार्य नरेन्द्रसेन द्वितीय

जीवन-परिचय : नरेन्द्रसेन नाम के कई आचार्यों का उल्लेख ग्रन्थों में मिलता है, परन्तु हम यहाँ 'नरेन्द्रसेन द्वितीय' का परिचय लिख रहे हैं—

गुणचन्द्र देव ने नरेन्द्रसेन को व्याकरण का पंडित बतलाया है। शिलालेख में लिखा है कि चन्द्र, कातन्त्र, जैनेन्द्र, शब्दानुशासन, पाणिनी और इन्द्र आदि व्याकरण ग्रन्थ नरेन्द्रसेन के लिए एक अक्षर के समान हैं।

नरेन्द्रसेन व्याकरण के साथ न्याय, दर्शन और काव्यशास्त्र के भी विद्वान थे।

नरेन्द्रसेन का समय प्राय: निश्चित ही है। इन्होंने विक्रम संवत् 1787 में ज्ञानयन्त्र की प्रतिष्ठा करवायी थी और विक्रम संवत् 1790 में पुष्पदन्त के 'जसहरचरिउ' की प्रतिलिपि स्वयं की थी। अत: इनका समय विक्रम संवत् 1787 से 1790 (ई. सन् 1730-1733 ई.) है।

रचना-परिचय : नरेन्द्रसेन की एक ही रचना है।

प्रमाण-प्रमेय-कलिका : यह न्याय विषयक एक लघु सुन्दर कृति है, जो न्याय के अभ्यासियों के लिए बहुत उपयोगी है। इसमें प्रमाण और प्रमेय- इन दो विषयों पर सरल संक्षिप्त और विशद रूप से चिन्तन किया गया है। भाषा-शैली सरल एवं प्रवाहपूर्ण है।